आदि को अन्य शास्त्रीय भवन के विशाल प्रांगण में विचार विमर्श करते दर्शाया है। हेनरिक उल्फिन के अनुसार:-

"जो महत्व पृष्ठभूमि का लास्ट सपर में हो वही महत्व स्कूल ऑफ एथेन्स में हो। पृष्ठभूमि में चित्रित वास्तु को हटाने से सम्पूर्ण रचना ही बेकार हो जाती है।"

एक अन्य चित्र "पारनासस" शीर्षक से है। इस चित्र में काव्य संगीत व गोष्ठी का दृश्य दर्शाया है।

इन चित्रों के अतिरिक्त रैफल ने कार्टून चित्र भी बनाये है जो सिस्टीन चैपल के पर्दों के लिए चित्रित किये गये। पोप ने रैफल को चैपल के पर्दों पर सन्तों के चमत्कारों पर आधारित 10 पर्दे चित्रित करने का कार्य सौंपा। रैफल ने ~~कई~~ बहुसंख्यक कार्टूनों का सृजन किया और ये कार्टून रैफल के चित्रों से भी ज्यादा आकर्षक है। इनमें समस्त भावों की सशक्त अभिव्यक्ति भरी हुई है। रेखांकन अति उत्तम है। और इन्हीं के द्वारा रैफल की ख्याती ड्राफ्ट्समैन के रूप में फैल गयी थी।

एक अन्य कार्टून "डेथ ऑफ एनानिआस" नाम से है। इसमें आज्ञा उल्लंघन के परिणाम स्वरूप एनानिआस की तत्कालीन मृत्यु का दृश्य चित्रित कर रैफल ने भय की जो अभिव्यक्ति की है, वह प्रसंशनीय है। इनके अतिरिक्त हीलिंग ऑफ द लेम मैन, फीड माई शीप, सेक्रीफाइस एट लीस्ट्रा, सर्मन ऐट एथेंस नामक कार्टूनों की रचना की।

रोमन व्यक्ति चित्र—

रैफल की कला प्रतिभा उनके व्यक्ति चित्रों में भी देखने को मिलती है वस्तुत: रोम में ही उसकी चित्रण शैली पूर्णत: ~~प्र~~ विकसित हो पाई थी। उसके व्यक्ति चित्रों की विशेषता, उनकी अभिव्यक्ति, सन्तुलन और समृद्धशाली रंगों के प्रयोग में है। वह चेहरे की आन्तरिक या चारित्रिक लक्षणों की अभिव्यक्ति को अधिक महत्व नहीं देता था। उसका उद्देश्य मुखाकृति की सौन्दर्य अनुकृति था। उसका एक महत्वपूर्ण व्यक्ति चित्र है "पोप जूलियस (द्वितीय)" इस व्यक्ति चित्र में पोप जूलियस को एक अलंकृत तथा भव्य कुर्सी पर बैठे दर्शाया है।
~~अन्य~~ अन्य व्यक्ति चित्र "काउन्ट कास्टीग्लियन" इस व्यक्ति चित्र में रैफल की सर्वाधिक प्रतिभा खुलकर सामने आई है। यह ल्योनार्डो की मोनालिसा जैसा ही विख्यात है। काफी कुछ मुद्रा भी वैसी ही है।

"कार्डिनल" के व्यक्ति-चित्र में उत्तम रेखांकन प्रशंसनीय है।

"सेन्ट पीटर" की मुखाकृति को भी उत्तम ढंग से बनाया गया है।

Scanned with C

"सिस्टीन मैडोना" रैफल के विख्यात व्यक्ति चित्रों में से है।
इसी बीच रैफल ने रोम में स्थित वैटिकन नामक स्थान पर ओल्ड एण्ड न्यू टेस्टामेन्ट पर आधारित भित्ति चित्र निरूपित किये तथा "विला फार्नेसिना" में प्राचीन यूनान की पौराणिक गाथाओं पर आधारित भित्ति-चित्र बनाये हैं।
प्रो॰ जियो के अनुसार:- "रैफल वास्तव में बहुत ही भाग्यशाली युवक था। जिसने इतनी छोटी अवस्था में इतनी उच्चस्तरीय कृतियाँ प्रस्तुत की है।"
रैफल के महत्वपूर्ण चित्रों में सर्वाधिक ख्याति मैडोना चित्रों से हुई इसके इन चित्रों में स्नेह, मातृत्व, ममता और सौन्दर्य के दर्शन होते हैं रैफल इस ग्रुप का महान कला साधक सिद्ध हुआ इसने कला प्रगति को एक नया मार्ग दिया।
ल्यूबक के अनुसार:-
"उसका अस्तित्व हर समय हर देश और सारी मानव जाति के लिए है। क्योंकि उनमें सत्य का अमर प्रकाश और विश्व व्यापी मिश्रित प्रभाव है।"
रैफल ने भोले-भाले बालक और सुन्दरियों के चित्रण में अपनी अद्भुत प्रतिभा का परिचय दिया है। इससे पूर्व किसी अन्य की तूलिका से इतना कोमल कार्य नहीं हुआ। इसने जीवन के सुन्दर पक्ष को ही चित्रित किया है। और इस प्रकार कला साधना में लीन व पराकाष्ठा को प्राप्त करते हुये 6 अप्रैल (गुड फ्राईडे) के दिन अपने ही जन्म दिवस की शाम को सूरज ढलने पर 6 अप्रैल 1520 को इसका देहावसान हो गया।